International Journal of Applied Research 2017; 3(7): 1230-1233

**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
**Impact Factor:** 5.2
IJAR 2017; 3(7): 1230-1233
www.allresearchjournal.com
Received: 21-05-2017
Accepted: 22-06-2017

**डॉ0 पल्लवी चौधरी**
असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, राजधनी कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

**Correspondence**
**डॉ0 पल्लवी चौधरी**
असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, राजधनी कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

# महराजगंज जनपद के पुरातत्व का एक अध्ययन

## डॉ0 पल्लवी चौधरी

**भौगोलिक परिचय**

महराजगंज जनपद 2 अक्टूबर 1989 को अस्तित्व में आया। इसके अंतर्गत वर्तमान में 4 तहसीलें तथा 12 विकास खण्ड है। नेपाल सीमा पर अवस्थित इस जिले के पूर्व में कुशीनगर, पश्चिम में सिद्धार्थनगर, दक्षिण में गोरखपुर जनपद स्थित है। इसका अक्षांशीय विस्तार $26^0$–$53^0$–42 से $27^0$–$26^0$–0 उत्तरी अक्षांश तथा देशान्तरीय विस्तार $83^0$–6–$0^0$ से $83^0$–$56^0$–$3^0$ पूर्वी देशान्तर है। जनपद का कुल क्षेत्रफल 2952 वर्ग किलोमीटर है।

यह जनपद मध्य गंगा मैदान की रोहिन, राप्ति, छोटी गंडक, बड़ी गंडक, नदियों द्वारा निक्षेपित जलोढ़ मिट्टी से निर्मित है। सम्पुर्ण जनपद एक मैदानी भाग है। इसकी औसत ऊँचाई 20 मीटर तथा सामान्य ढ़ाल उत्तर पश्चिम से दक्षिण पूर्व की ओर है।[1]

इस जनपद का औसत वार्षिक तापमान $25.57^0$ से0ग्रे0 है। जनवरी यहाँ का सबसे ठंडा माह होता है और मई माह यहाँ का सबसे गर्म माह होता है।

महराजगंज जनपद की वनस्पतियां मानसूनी पतझड़ वाली हैं। यहाँ 9.88ः भू–भाग पर वनों का विस्तार पाया जाता है।[2]

**पूर्ववर्ती अनुसंधान कार्यों का समीक्षात्म विवरणः** महराजगंज जनपद के पुरातत्व को ध्यान में रख कर सर्वप्रथम इस क्षेत्र ने सन् 1877 से 88 तक सर अलेकजेण्डर कनिंधम के मार्गदर्शन में ए.सी.एल. कार्लायल ने महराजगंज जिले में सर्वेक्षण करके कई पुरातात्विक महत्व के स्थलों को सूचीबद्ध किया।[3]

परन्तु इस क्षेत्र पर विद्वानों का ध्यान स्वतंत्रता के बाद आकर्षित हुआ और इस क्षेत्र के दो महत्वपुर्ण पुरास्थल बनरसिया कला और राजधानी टीले का उत्खनन करवाया गया। जिससे इय क्षेत्र के इतिहास पर और अधिक प्रकाश पड़ा।

**बनरसिया कला का पुरातात्विक उत्खननः** महराजगंज जनपद में डॉ0 लाल चन्द्र सिंह के नेतृत्व में पटना इकाई में नौतनवां तहसील में स्थित बनरसिया कला (अक्षांश $27^0$18ष्उत्तरी, देशान्तर $83^0$ 16ष् पूर्वी) का 1991–1992 ईसवीं में छोटे पैमाने पर उत्खनन करवाया।[4] यह पुरास्थल 100 एकड़ के क्षेत्र में फैला है। पूर्व, पश्चिम दिशा में ईंटों का बना एक स्तुप प्राप्त हुआ है जिसकी बनावट आयातकार है। यहाँ से रेड वेयर (लाल पात्र) कृष्ण लेपित मृदभाण्ड, ग्रे वेयर (धूसर मृदभाण्ड) तथा उत्तरी काली पॉलिश युक्त मृदभाण्ड (एन.बी.पी. वेयर) मुख्य रुप से प्राप्त हुए हैं। यह पुरास्थल नरहन के द्वितीय सांस्कृतिक चरण के समतुल्य है।

**राजधानी टीले का पुरातात्विक उत्खननः** उत्तर प्रदेश राज्य पुरातत्व विभाग में जनपद महराजगंज से 67 कि0मी0 की दूरी पर गोरखपुर सोनौली राष्ट्रीय राजमार्ग से 6 कि0मी0 पश्चिम की ओर डामर रोड पर स्थित राजधानी टीले का 2004–2005 ईसवीं में उत्खनन करवाया।[5] उत्खनन के फलस्वरुप यहाँ से 2800 वर्ष पूर्व की दो संस्कृतियों के पुरावशेष प्राप्त हुए हैं।

**स्वयं द्वारा पुरातात्विक सर्वेक्षण : पुरास्थलों का परिचय एवं महत्व**

**सिंहपुर**

यह पुरातात्त्विक स्थल महराजगंज जनपद के निचलौल तहसील से लगभग 7 किमी0 दूर दक्षिण–पष्चिम में स्थित है। इस पुरास्थल का विस्तार लगभग 4 एकड़ क्षेत्र में है। वर्तमान समय में इस पुरास्थल को खेत के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है। इन खेतों में मृद्भाण्डों के टुकड़े बिखरे पड़े हैं। स्थानीय अनुश्रुति के अनुसार यहाँ ''थारू लोग' रहते थे।

इस पुरातात्त्विक स्थल का जब मैंने विस्तृत एवं गहन सर्वेक्षण किया तो विभिन्न आकार–प्रकार के लाल रंग के मृद्भाण्ड (रेड वेयर) प्राप्त हुए। सूक्ष्म दृश्टि से देखने पर यह मृद्भाण्ड नरहन, आदि पुरास्थलों के कुशाणकालीन पात्रों के समान प्रतीत होते हैं। इस दृश्टि से इस पुरातात्त्विक स्थल का कुशाणकालीन संस्कृति के महराजगंज जनपद में प्रसार के दृश्टिकोण से महत्वपूर्ण स्थान है। ऐसा प्रतीत होता है कि सर्वप्रथम यहां पर कुशाणकालीन मानव ने अपना अधिवास बनाया।

### सिहुलीपरसा

यह पुरातात्त्विक स्थल महराजगंज जनपद के निचलौल तहसील से लगभग 11 किमी0 दूर दक्षिण–पष्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग दो एकड़ क्षेत्र में खेत के रूप में फैला हुआ है। इसके समीप 'काली माई' का स्थान है। स्थानीय लोगों के अनुसार यहाँ 'थारू लोग' रहते थे।

इस पुरातात्त्विक स्थल का जब मैंने विस्तृत एवं गहन सर्वेक्षण किया तो विभिन्न प्रकार के ब्लैक एण्ड रेड वेयर (कृश्ण लोहित मृद्भाण्ड), ब्लैक स्लिप्ड वेयर (कृश्ण लेपित) और विभिन्न प्रकार के रेड वेयर (लाल मृद्भाण्ड) प्रकाष में आये। इन पात्र–परम्पराओं के सूक्ष्म अध्ययन से इस स्थल का पुरातात्त्विक महत्व उजागर हुआ है। यहाँ से प्राप्त ब्लैक एण्ड रेड वेयर, ब्लैक स्लिप्ड वेयर और सम्बन्धित रेड वेयर सोहगौरा, नरहन, लहुरादेवा आदि से प्राप्त उसी प्रकार के ताम्रपाशाणिक पात्रों से मिलते–जुलते प्रतीत हो रहे हैं। यहां से प्राप्त कुछ रेड वेयर षुंग कुशाणकाल के हैं, क्योंकि इसी प्रकार के रेड वेयर, सोहगौरा, नरहन के षुंग–कुशाणकाल से प्राप्त हुए हैं। अतः इस आधार पर ''सिहुलीपरसा'' नामक स्थल का ताम्रपाशाणिक, ऐतिहासिक संस्कृतियों के महराजगंज जनपद में प्रसार की दृश्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है।

### बेलवाकाजी

यह पुरास्थल महराजगंज जनपद में जिला मुख्यालय से लगभग 12 किमी0 दूर गोरखपुर फरेंदा मार्ग पर स्थित है। इस पुरास्थल का विस्तार 14 एकड़ क्षेत्र में है, जिसके अधिकांष भाग पर खेती की जाती है। समय–समय पर ट्रैक्टर द्वारा जुताई करने पर स्थानीय लोगों के अनुसार यहाँ पर मृण्मूर्तियाँ, घड़े, सुराही, सिल–लोढ़े आदि मिले थे। किन्तु मौके पर इसकी प्राप्ति सम्भव न हो सकी।

सम्पूर्ण पुरास्थल का गहन एवं विस्तृत सर्वेक्षण करने के उपरान्त यहाँ से एन.बी.पी. वेयर (उत्तरी काली पॉलिष मृद्भाण्ड) और रेड वेयर (लाल मृद्भाण्ड ) प्राप्त हुए हैं। सूक्ष्म दृश्टि से देखने पर यह मृद्भाण्ड नरहन एवं सोहगौरा से प्राप्त पात्रों के समान हैं। अतः यह पुरास्थल इस क्षेत्र में प्राक्–मौर्य एवं मौर्ययुगीन तथा कुशाणकालीन लोगों के विस्तार को व्यक्त करता है।

### पुरैनाधूस

यह स्थल महराजगंज जनपद में जिला मुख्यालय से लगभग 14 किमी0 पूर्व दिषा में पुरैना गाँव में स्थित है। यह प्राचीन पुरैना ताल के पूर्वी किनारे पर लगभग 22 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। सामान्य धरातल से टीले की ऊँचाई लगभग 11 फुट है। स्थानीय अनुश्रुति के अनुसार यहाँ 'थारू' लोग रहते थे। वर्तमान समय में टीले को काटकर खेत बनाया जा रहा है। इस पुरास्थल का सर्वेक्षण सर्वप्रथम डॉ0 अखिलेष कुमार चौबे ने किया था (पूर्वी उत्तर प्रदेष की ताम्रपाशाणिक संस्कृतियाँ पृश्ठ–80)

गहन एवं विस्तृत सर्वेक्षण करने के उपरान्त यहाँ से डोरी छाप मृद्भाण्ड, धूसर मृद्भाण्ड तथा लाल मृद्भाण्ड के खण्डित अंष प्राप्त हुए हैं। यहाँ से प्राप्त पुरावषेशों में डोरी छाप मृद्भाण्ड नवपाशाणकाल के माने जा सकते हैं, क्योंकि इसी प्रकार के मृद्भाण्ड सोहगौरा, इमलीडीह आदि के नवपाशाणिक चरण से उत्खननोपरान्त प्राप्त हुए हैं। धूसर रंग के मृद्भाण्ड एवं लाल रंग के मृद्भाण्ड ऐतिहासिककाल के प्रतीत हो रहे हैं, क्योंकि इसी प्रकार के मृद्भाण्ड सोहगौरा, इमलीडीह के ऐतिहासिक चरण से मिले हैं। इस प्रकार इस स्थल का महराजगंज जनपद में नवपाशाणिक एवं ऐतिहासिक कालीन संस्कृति के विस्तार की दृश्टि से महत्वपूर्ण स्थान है।

### सर्वेक्षित पुरास्थलों का छायाचित्र

सिंहपुर

सिहुलीपरसा

बेलवाकाजी

पुरैनाधूस

**सर्वेक्षित पुरास्थलों से प्राप्त पुरावशेषों का छायाचित्र**

पुरैनाधूस से प्राप्त पुरावशेष

सिंहपुर से प्राप्त पुरावशेष

सिहुलीपरसा से प्राप्त पुरावशेष

बेलवाकाजी से प्राप्त पुरावशेष

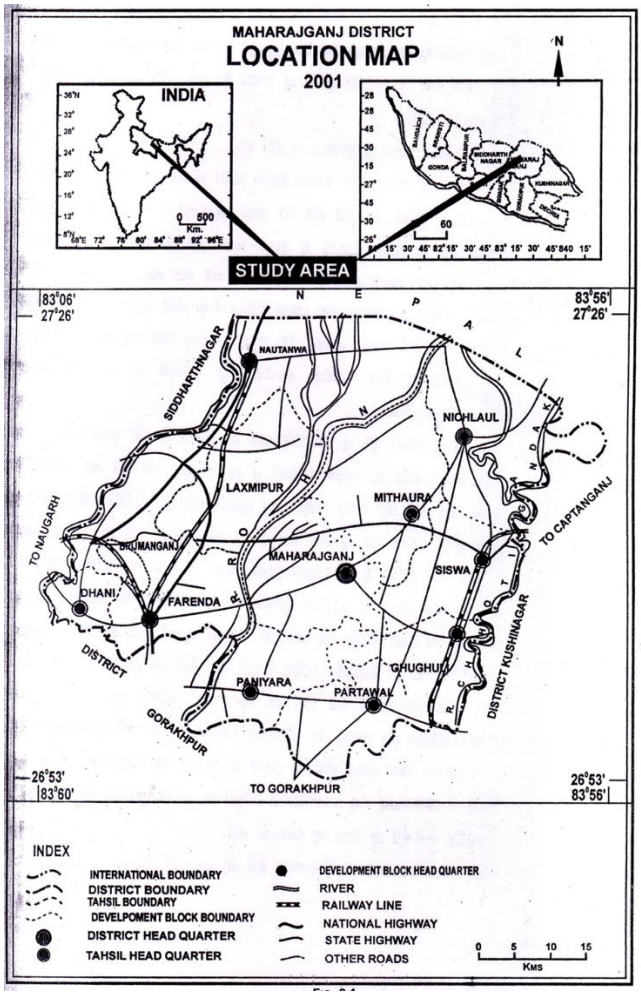

**निष्कर्षः**

यह शोध कार्य सीमित क्षेत्र में किया गया है परन्तु इससे इस जनपद के पुरातात्विक इतिहास पर उचित प्रकाश पड़ता है। यदि भविष्य में इस क्षेत्र के महत्वपूर्ण पुरास्थलों का उत्खनन किया जा सके तो इस क्षेत्र से संबंधित विभिन्न संस्कृतियों तथा संस्कृति विशेष से सम्बन्धित लोागों के सामाजिक संगठन, रहन–सहन, खान–पान, रिति–रिवाज, व्यवसाय आदि का निश्चयात्मक अध्ययन किया जा सकेगा।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची**


1. विकास पुस्तिका (2015): सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, महराजगंज पृष्ठ 7।
2. श्रीवास्तव, मधुलिकाः महराजगंज जनपद में भूमि संसाधन उपयोग एवं ग्रामीण विकास, अप्रकाशित शोध प्रबंध, भूगोल विभाग, दी0द0उ0 गो0वि0गो0 पृष्ठ 23–27।
3. चक्रवर्ती, दिलीप कुमार (2007): आर्कियोलॉजिकल जियोग्राफी आफॅ द गंगा प्लेन, पृष्ठ 37–38।
4. इण्डियन आर्कियोलाजीः ए रिव्यू 1991–1992 पृष्ठ 109–110
5. उत्तर प्रदेश राज्य पुरातत्व विभाग से प्राप्त उत्खनन रिपोर्ट।